कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केंद्र : 12 वर्षों में 12 करोड़ से अधिक राजस्व अर्जन

चौदह राज्यों के 1800 से अधिक यंत्रों का किया परीक्षण

■ निज संवाददाता

बीकानेर । स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केंद्र ने गत 12 वर्षों में देश के 14 राज्यों के 1800 से अधिक कृषि यंत्रों का परीक्षण किया है। इससे केंद्र को 12 करोड रुपए से अधिक राजस्व प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी ने बताया कि देशभर में ऐसे 31 केंद्र हैं। इन केंद्रों में ऐसे कृषि यंत्रों का परीक्षण होता है, जिन्हें केंद्र अथवा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा सब्सिडी पर किसानों को उपलब्ध करवाया जाता है। प्रदेश में बीकानेर के अलावा उदयपुर में ऐसा केंद्र है। उन्होंने बताया कि कुलपति डॉ. अरुण कुमार के नेतृत्व में गत समय में यहां अनेक नवाचार किए गए हैं, जिनका किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिला है। केंद्र प्रभारी इंजी. विपिन लढ्ढा ने बताया कि बीकानेर के केंद्र को गत 12 वर्षों में 14 राज्यों के 2 हजार 450 कृषि यंत्र परीक्षण के लिए प्राप्त हुए। अब तक इनमें से 1800 से अधिक का परीक्षण कर लिया गया है। केंद्र में परीक्षण के लिए सबसे अधिक यंत्र पंजाब, हरियाणा और गुजरात से प्राप्त होते हैं। वहीं प्रशिक्षण में आने वाले

यंत्रों में अधिक संख्या रोटावेटर, थ्रेशर, हैरो, सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल इत्यादि की होती है। इंजी. लढ्ढा ने बताया कि किसानों को अत्याधुनिक कृषि यंत्र 100 से लेकर 500 रुपए प्रति दिवस किराए के हिसाब से उपलब्ध करवाई जाते हैं। यह ऐसे किसानों के लिए उपयोगी साबित होते हैं, जो ऐसे यंत्र क्रय नहीं कर सकते। उन्होंने बताया कि अब तक जिले और आसपास के क्षेत्रों के 200 से ज्यादा किसानों ने इनका लाभ उठाया है।

कृषि विश्वविद्यालय में 1800 से अधिक यंत्रों का किया परीक्षण

कामयाब कलम रिपोर्टर।

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केंद्र ने पिछले बारह सालों में देश के 14 राज्यों के 1800 से अधिक कृषि यंत्रों का परीक्षण किया है। इससे केंद्र को 12 करोड रुपए से अधिक राजस्व प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी ने बताया कि देशभर में ऐसे 31 केंद्र हैं। इन केंद्रों में ऐसे कृषि यंत्रों का परीक्षण होता है, जिन्हें केंद्र अथवा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा सब्सिडी पर किसानों को उपलब्ध करवाया जाता है। प्रदेश में बीकानेर के अलावा उदयपुर में ऐसा केंद्र है। उन्होंने बताया कि कुलपति डॉ. अरुण कुमार के नेतृत्व में गत समय में यहां अनेक नवाचार किए गए हैं, जिनका किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिला है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. योगेश शर्मा ने बताया कि यह केंद्र, विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है। वित्त नियंत्रक राजेंद्र खत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय के राजस्व वृद्धि की दृष्टि से भी यह केंद्र अपनी विशेष पहचान रखता है। केंद्र प्रभारी इंजी. विपिन लढ्ढा ने बताया कि बीकानेर के केंद्र को गत 12 वर्षों में 14 राज्यों के 2 हजार 450 कृषि यंत्र परीक्षण के लिए प्राप्त हुए। अब तक इनमें से 1800 से अधिक का परीक्षण कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि यंत्र निर्माताओं द्वारा परीक्षण के आवेदन भारत सरकार द्वारा निर्धारित नॉर्म्स के अनुसार किए जाते हैं। केंद्र द्वारा तीन स्तर पर यह परीक्षण किए जाते हैं। आवेदन के पश्चात केंद्र का प्रतिनिधि यंत्र निर्माता के यहां पहुंचकर यंत्र का चिन्हीकरण कर केंद्र पर लाता है। इसका परीक्षण केंद्र की प्रयोगशाला, फील्ड और पुनः प्रयोगशाला में किया जाता है। पहले चरण के दौरान यंत्र को खोला जाता है और इसके एक-एक पुर्जे का नॉर्म्स के अनुसार आकलन किया जाता है। दूसरे चरण में खेत में लगभग पच्चीस घंटे तक इसे चलाया जाता है और वह कार्य किया जाता है, जिसके लिए यह यह यंत्र बना है। तीसरे चरण में पुनः प्रयोगशाला में यह आकलन किया जाता है कि खेत में चलने के पश्चात इसमें क्या प्रभाव पड़ा। इस पूरी प्रक्रिया के लिए केंद्र पर अत्याधुनिक मशीनरी उपलब्ध करवाई गई है। परीक्षण के पश्चात इसकी रिपोर्ट तैयार की जाती है।

दैनिक राजस्थानी चिराग
Rajasthanichirag1996@gmailDcom

कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केंद्र : बारह वर्षों में किया 12 करोड़ से अधिक राजस्व अर्जन

>> चौदह राज्यों के 1800 से अधिक यंत्रों का किया परीक्षण

राजस्थानी चिराग रिपोर्टर

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केंद्र ने गत 12 वर्षों में देश के 14 राज्यों के 1800 से अधिक कृषि यंत्रों का परीक्षण किया है। इससे केंद्र को 12 करोड रुपए से अधिक राजस्व प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी ने बताया कि देशभर में ऐसे 31 केंद्र हैं। इन केंद्रों में ऐसे कृषि यंत्रों का परीक्षण होता है, जिन्हें केंद्र अथवा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा सब्सिडी पर किसानों को उपलब्ध करवाया जाता है। प्रदेश में बीकानेर के अलावा उदयपुर में ऐसा केंद्र है। उन्होंने बताया कि कुलपति डॉ. अरुण कुमार के नेतृत्व में गत समय में यहां अनेक नवाचार किए गए हैं, जिनका किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिला है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. योगेश शर्मा ने बताया कि यह केंद्र, विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है। वित्त नियंत्रक राजेंद्र खत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय के राजस्व वृद्धि की दृष्टि से भी यह केंद्र अपनी विशेष पहचान रखता है। केंद्र प्रभारी इंजी. विपिन लढ्ढा ने बताया कि बीकानेर के केंद्र को गत 12 वर्षों में 14 राज्यों के 2 हजार 450 कृषि यंत्र परीक्षण के लिए प्राप्त हुए। अब तक इनमें से 1800 से अधिक का परीक्षण कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि यंत्र निर्माताओं द्वारा परीक्षण के आवेदन भारत सरकार द्वारा निर्धारित नॉर्म्स के अनुसार किए जाते हैं। केंद्र द्वारा तीन स्तर पर यह परीक्षण किए जाते हैं। आवेदन के पश्चात केंद्र का प्रतिनिधि यंत्र निर्माता के यहां पहुंचकर यंत्र का चिन्हीकरण कर केंद्र पर लाता है। इसका परीक्षण केंद्र की प्रयोगशाला, फील्ड और पुनः प्रयोगशाला में किया जाता है। पहले चरण के दौरान यंत्र को खोला जाता है और इसके एक-एक पुर्जे का नॉर्म्स के अनुसार आकलन किया जाता है। दूसरे चरण में खेत में लगभग पच्चीस घंटे तक इसे चलाया जाता है और वह कार्य किया जाता है, जिसके लिए यह यह यंत्र बना है। तीसरे चरण में पुनः प्रयोगशाला में यह आकलन किया जाता है कि खेत में चलने के पश्चात इसमें क्या प्रभाव पड़ा। इस पूरी प्रक्रिया के लिए केंद्र पर अत्याधुनिक मशीनरी उपलब्ध करवाई गई है। परीक्षण के पश्चात इसकी रिपोर्ट तैयार की जाती है। उन्होंने बताया कि केंद्र में परीक्षण के लिए सबसे अधिक यंत्र पंजाब, हरियाणा और गुजरात से प्राप्त होते हैं। वहीं प्रशिक्षण में आने वाले यंत्रों में अधिक संख्या रोटावेटर, थ्रेशर, हैरो, सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल इत्यादि की होती है। इंजी. लढ्ढा ने बताया कि परीक्षण के उपरांत कई बार यंत्र निर्माता अपना यंत्र वापस नहीं ले जाते। इन यंत्रों का उपयोग किसानों को हो सके, इसके मध्यनजर केंद्र द्वारा कस्टम हायरिंग सिस्टम प्रारंभ किया गया है। इसके तहत किसानों को अत्याधुनिक कृषि यंत्र 100 से लेकर 500 रुपए प्रति दिवस किराए के हिसाब से उपलब्ध करवाई जाते हैं। यह ऐसे किसानों के लिए उपयोगी साबित होते हैं, जो ऐसे यंत्र क्रय नहीं कर सकते। उन्होंने बताया कि अब तक जिले और आसपास के क्षेत्रों के 200 से ज्यादा किसानों ने इनका लाभ उठाया है।

12 साल में 1800 से ज्यादा यंत्रों का परीक्षण कर जुटाया 12 करोड़ रुपए का राजस्व

आधुनिक कृषि यंत्रों के परीक्षण और प्रशिक्षण में अग्रणी बना एसकेआरयू

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय प्रदेश के युवाओं को कृषि संकाय की शिक्षा देने के साथ ही आधुनिक कृषि यंत्रों का किसानों को प्रशिक्षण भी दे रहा है। साथ ही गत 12 साल से यहां कृषि यंत्रों के परीक्षण का केन्द्र भी संचालित है। इसने 1800 से ज्यादा कृषि यंत्रों का परीक्षण किया है। इससे 1200 करोड़ रुपए से ज्यादा का राजस्व भी प्राप्त हुआ है।

कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण के उदयपुर और बीकानेर में दो केन्द्र है। बीकानेर उत्तर भारत का प्रमुख केंद्र होने से यहां 14 राज्यों में बन रहे कृषि यंत्र निर्माता परीक्षण कराने लाते है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी ने बताया कि देशभर में ऐसे 31 केंद्र हैं। इनमें ऐसे कृषि यंत्रों का परीक्षण होता है, जिन्हें केंद्र अथवा राज्य सरकारें सब्सिडी पर किसानों को उपलब्ध करवाती है। यंत्र निर्माताओं की ओर से परीक्षण के आवेदन भारत सरकार की ओर से तय मापदंड अनुसार किए जाते हैं।

वर्कशॉप से चिन्हित कर लाते हैं यंत्र

आवेदन के पश्चात केंद्र का प्रतिनिधि यंत्र निर्माता की वर्कशॉप में जाकर यंत्र का चिन्हीकरण कर केंद्र पर लाता है।

अनुसंधान निदेशक प्रो. योगेश शर्मा ने बताया कि यह केंद्र विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है। वित्त नियंत्रक राजेंद्र खत्री ने बताया कि विश्वविद्यालय के राजस्व वृद्धि की दृष्टि से भी केंद्र का बड़ा योगदान रहता है।

तीन चरणों में परीक्षण

केंद्र प्रभारी इंजी. विपिन लढ्ढा ने बताया कि परीक्षण केंद्र की प्रयोगशाला, फील्ड और पुन: प्रयोगशाला में परीक्षण किया जाता है। पहले चरण में यंत्र को खोलकर इसके पुर्जों को मापदंड पर परखा जाता है। दूसरे चरण में खेत में करीब 25 घंटे उपयोग में लेकर इसकी कार्य क्षमता को परखा जाता है। तीसरे चरण में यंत्र या मशीन को वापस प्रयोगशाला लाकर यह देखा जाता है कि खेत में उपयोग से इसे पर क्या प्रभाव पड़ा। इसके आधार पर परीक्षण रिपोर्ट बनती है।

पंजाब-हरियाणा व गुजरात से भी यंत्र

परीक्षण केंद्र में सबसे अधिक यंत्र पंजाब, हरियाणा और गुजरात से आते है। साथ ही राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर जिले से भी यंत्र आते है। किसानों को अत्याधुनिक कृषि यंत्र 100 से लेकर 500 रुपए प्रति दिवस की दर से किराए पर भी उपलब्ध करवाए जाते है।

दैनिक भास्कर
बीकानेर 21-07-2024

12 वर्षों में 12 करोड़ से अधिक का राजस्व अर्जित, देश में 31 केंद्र, बीकानेर भी शामिल

कृषि विश्वविद्यालयः अब तक 14 राज्यों के 1800 से अधिक कृषि यंत्रों का किया जा चुका है परीक्षण

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केंद्र ने पिछले 12 वर्षों में देश के 14 राज्यों के 1800 से अधिक कृषि यंत्रों का परीक्षण किया है। इससे केंद्र को 12 करोड़ रुपए से अधिक राजस्व प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी ने बताया कि देशभर में ऐसे 31 केंद्र हैं। इन केंद्रों में ऐसे कृषि यंत्रों का परीक्षण होता है, जिन्हें केंद्र अथवा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा सब्सिडी पर किसानों को उपलब्ध करवाया जाता है। प्रदेश में बीकानेर के अलावा उदयपुर में ऐसा केंद्र है। उन्होंने बताया कि कुलपति डॉ. अरुण कुमार के नेतृत्व में गत समय में यहां अनेक नवाचार किए गए हैं, जिनका किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिला है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. योगेश शर्मा ने बताया कि यह केंद्र विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है। वित्त नियंत्रक राजेंद्र खत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय के राजस्व वृद्धि की दृष्टि से भी यह केंद्र अपनी विशेष पहचान रखता है। केंद्र में परीक्षण के लिए सबसे अधिक यंत्र पंजाब, हरियाणा और गुजरात से प्राप्त होते हैं। वहीं प्रशिक्षण में आने वाले यंत्रों में अधिक संख्या रोटावेटर, थ्रेशर, हैरो, सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल इत्यादि की होती है।

बीकानेर के केंद्र को पिछले 12 वर्षों में 14 राज्यों के 2 हजार 450 कृषि यंत्र परीक्षण के लिए प्राप्त हुए। अब तक इनमें से 1800 से अधिक का परीक्षण कर लिया गया है। यंत्र निर्माताओं द्वारा परीक्षण के आवेदन भारत सरकार द्वारा निर्धारित नॉर्म्स के अनुसार किए जाते हैं।
-इंजी.विपिन लड्ढा, केंद्र प्रभारी, कृषि विवि

यह है प्रक्रिया: आवेदन के बाद तीन स्तर पर होता है परीक्षण : केंद्र द्वारा तीन स्तर पर यह परीक्षण किए जाते हैं। आवेदन के बाद केंद्र का प्रतिनिधि यंत्र निर्माता के यहां पहुंचकर यंत्र का चिन्हीकरण कर केंद्र पर लाता है। इसका परीक्षण केंद्र की प्रयोगशाला, फील्ड और पुनः प्रयोगशाला में किया जाता है। पहले चरण के दौरान यंत्र को खोला जाता है और इसके एक-एक पुर्जे का नॉर्म्स के अनुसार आकलन किया जाता है। दूसरे चरण में खेत में लगभग पच्चीस घंटे तक इसे चलाया जाता है और वह कार्य किया जाता है, जिसके लिए यह यह यंत्र बना है। तीसरे चरण में पुनः प्रयोगशाला में यह आकलन किया जाता है कि खेत में चलने के बाद इसमें क्या प्रभाव पड़ा। इस पूरी प्रक्रिया के लिए केंद्र पर अत्याधुनिक मशीनरी उपलब्ध करवाई गई है। परीक्षण के बाद इसकी रिपोर्ट तैयार की जाती है।

चौदह राज्यों के 1800 से अधिक यंत्रों का परीक्षण

बीकानेर, (कासं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने गत 12 वर्षों में देश के 14 राज्यों के 1800 से अधिक कृषि यंत्रों का परीक्षण किया है। इससे केन्द्र को 12 करोड़ रूपए से अधिक राजस्व प्राप्त हुआ है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी ने बताया कि देशभर में ऐसे 31 केन्द्र हैं। इन केन्द्रों में ऐसे कृषि यंत्रों का परीक्षण होता है, जिन्हें केन्द्र अथवा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा सब्सिडी पर किसानों को उपलब्ध करवाया जाता है।

प्रदेश में बीकानेर के अलावा उदयपुर में ऐसा केन्द्र है। उन्होंने बताया कि कुलपति डॉ. अरूण कुमार के नेतृत्व में गत समय में यहां अनेक नवाचार किए गए हैं, जिनका किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिला है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. योगेश शर्मा ने बताया कि यह केन्द्र विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र खत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय के राजस्व वृद्धि की दृष्टि से भी यह केन्द्र अपनी विशेष पहचान रखता है।

केन्द्र प्रभारी इंजीनियर विपिन लड्ढा ने बताया कि बीकानेर के केंद्र को गत 12 वर्षों में 14 राज्यों के 2 हजार 450 कृषि यंत्र परीक्षण के लिए प्राप्त हुए। अब तक इनमें से 1800 से अधिक का परीक्षण कर लिया गया है।